Article Date	Headline / Summary	Publication
17 Apr 2026	हेल्थ इंश्योरेंस में 'ऐड ऑन': क्यों जरूरी है ओपीडी, डायग्नोस्टिक्स और प्रिवेंटिव केयर?	Navbharat Times

हेल्थ इंश्योरेंस में 'ऐड ऑन': क्यों जरूरी है ओपीडी, डायग्नोस्टिक्स और प्रिवेंटिव केयर?

Health Insurance Add-on: किसी भी बड़े अस्पताल में दो तरीके से इलाज होता है। एक तो भर्ती किए गए मरीजों का इलाज। और दूसरा ओपीडी या आउट पेशेंट डिपार्टमेंट में इलाज। पिछले कुछ सालों में देखा गया है कि भारत में ओपीडी पर होने वाला खर्च बहुत ही ज़्यादा बढ़ा है। वित्त वर्ष 2023-24 के दौरान तो यह 37.7 अरब डॉलर तक पहुंच गया है। इसके बावजूद ओपीडी इंश्योरेंस की पहुंच 0.1% से भी कम बनी हुई है। आपने कभी सोचा है कि इसकी वजह क्या है?

बजाज जनरल इंश्योरेंस लिमिटेड के चीफ टेक्निकल ऑफिसर कॉमर्शियल अमरनाथ सक्सेना का कहना है कि जिस हिसाब से ओपीडी खर्च बढ़ रहा है, उस लिहाज से ओपीडी एड-ऑन पहले से कहीं ज़्यादा जरूरी हो गया है। वक्त आ गया है कि आप एक ऐसा हेल्थ इंश्योरेंस चुनें, जो कि ओपीडी और मेडिकल जांच(डायग्नोस्टिक्स)से जुड़े सारे खर्च कवर करे। जानते हैं इस बारे में उनके विचार।

हेल्थ इंश्योरेंस में ये एड-ऑन फायदेमंद

हेल्थ इंश्योरेंस में कई तरह के एड-ऑन मिलते हैं। इंश्योरेंस पॉलिसी में इस तरह के कुछ एड-ऑन इसलिए भी बेहद फायदेमंद होते हैं, क्योंकि छोटी-मोटी बीमारी या स्वास्थ्य संबंधी दिक्कतों में आपको अस्पताल में भर्ती होने की जरूरत नहीं पड़ती है। डॉक्टर की सलाह, जरूरी जांच और दवाइयों के जरिए ही इन्हें आसानी से ठीक किया जा सकता है। देखा जाए तो भारत की लगभग 90% से अधिक शहरी आबादी सालाना तौर पर 10,000 रुपये से अधिक का खर्च डॉक्टर की सलाह, जांच, दवाई और नेत्र चिकित्सा पर करती है। यही वजह है कि अधिकतर लोग ऐसी कॉम्प्रिहेंसिव हेल्थ इंश्योरेंस पॉलिसी चुनते हैं जिसमें ओपीडी और डायग्नोस्टिक्स जैसे फायदे पहले से शामिल होते हैं और उन्हें इसके लिए अलग से ऐड-ऑन खरीदने की जरूरत नहीं पड़ती है। प्रिवेंटिव हेल्थ चेक-अप के मामले में ये फायदे बेहद अहम भूमिका निभाते हैं और हेल्थ इंश्योरेंस पॉलिसी में इन्हें शामिल करना बेहद ज़रूरी है। इससे न केवल आपको अपनी जेब से अत्यधिक पैसे खर्च करने की झंझट से मुक्ति मिल जाएगी, बल्कि जल्द से जल्द बीमारी का पता भी लगाया जा सकेगा।

ओपीडी प्लान क्यों जरूरी

ओपीडी प्लान में डॉक्टर की सलाह, जरूरी मेडिकल जांच, दवाइयों का खर्च और मामूली सर्जरी या इलाज कवर किए जाते हैं, जिनके लिए अस्पताल में भर्ती होने की जरूरत नहीं होती है। और तो और इसमें फिजियोथेरेपी भी शामिल होती है। कुछ ओपीडी का फायदा आप कैशलेस तरीके से भी उठा सकते हैं, लेकिन यह सहूलियत इंश्योरेंस कंपनी के नेटवर्क में शामिल

क्लिनिक, डायग्नोस्टिक सेंटर, फार्मेसी और अस्पतालों तक ही सीमित होती है। इसका अर्थ यह है कि इन सुविधा केंद्रों पर आपको तत्काल किसी तरह का भुगतान करने की जरूरत नहीं होगी और खर्चों का निपटान सीधे आपकी इंश्योरेंस कंपनी और अस्पताल बीच होगा। कई इंश्योरेंस पॉलिसियों में इंटीग्रेटेड प्रिवेंटिव हेल्थ कवर भी शामिल होते हैं, जो कि बीमारियों की जांच के साथ-साथ चेक-अप जैसी सहूलियतों को भी प्रोत्साहित करते हैं। इसमें ब्लड प्रेशर कंट्रोल करने के साथ-साथ डायबिटीज और कैंसर जैसी बीमारियों में भी आपका खास ख्याल रखा जाता है, ताकि बीमारी का जल्द से जल्द पता लगाया सके और यथाशीघ्र इलाज की सुविधा प्रदान की जाए।

डायग्नोस्टिक टेस्ट का भी खर्च बचेगा

ओपीडी इलाज के दौरान डायग्नोस्टिक टेस्ट जैसे कि ब्लड टेस्ट, एक्स-रे और एमआरआई का खर्च काफी ज़्यादा होता है। हेल्थ इंश्योरेंस में ओपीडी लाभ सुनिश्चित करता है कि आपके डॉक्टर द्वारा सुझाए गए मेडिकल टेस्ट कवर किए जाएं। भारत में ब्रांडेड दवाइयों की कीमत जेनरिक दवाइयों की तुलना में काफी ज़्यादा होती है, खासतौर पर कार्डियोलॉजी, रेस्पिरेटरी और डायबिटीज जैसे मामलों में। ऐसे में अगर आपको अपनी जेब से पैसे खर्च करने पड़े, तो आपको अत्यधिक आर्थिक बोझ का सामना करना पड़ सकता है। अगर आपके हेल्थ इंश्योरेंस में ओपीडी कवर किया जाता है, तो डॉक्टर द्वारा बताई गई दवाइयों का खर्च इसमें शामिल किया जा सकता है। हालांकि यहां इस बात पर ध्यान देना जरूरी है कि जो दवाइयां डॉक्टर की पर्ची के बिना हैं, उन्हें कवर नहीं किया जाता है। ओपीडी एड-ऑन ऐसे मरीजों के लिए खासतौर पर फायदेमंद हैं जो असाध्य रोगों से जूझ रहे हैं जैसे कि डायबिटीज, हाइपरटेंशन इत्यादि। यह बुजुर्गों के लिए खासतौर पर फायदेमंद है, क्योंकि बढ़ती उम्र में उन्हें खास देखभाल और लगातार मेडिकल जांच की जरूरत होती है, ताकि जीवन के इस पड़ाव पर उन्हें जूझना न पड़े और वे सुखमय जीवन व्यतीत करें।

वेटिंग पीरियड का ध्यान रखें

ओपीडी प्लान का चुनाव करने से पहले आपके लिए यह जानना बेहद जरूरी है कि आमतौर यह एक वेटिंग पीरियड के साथ आता है। हरेक इंश्योरेंस कंपनी अलग-अलग वेटिंग पीरियड पेश करती है। इसके अलावा, आपको पॉलिसी की शर्तों को ध्यान से पढ़ना चाहिए, ताकि आपको सब-लिमिट्स की पूरी जानकारी हो सके। यह ध्यान रखना भी बेहद जरूरी है कि भले ही ओपीडी कवर के लिए आपको थोड़े ज्यादा प्रीमियम भरने पड़ सकते हैं, लेकिन इसके फायदे ज्यादा हैं। हेल्थ इंश्योरेंस के प्रीमियम पर टैक्स में भी छूट मिलती है। पुरानी इनकम टैक्स व्यवस्था के तहत 80D सेक्शन के अंतर्गत क्लेम करके आप इसका फायदा उठा सकते है।